वर्ष-१४ अंक-७
२७ मार्च २०१८

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक रवि
मासिक

वर्ष 16 अंक–07

27 मार्च 2018
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गॉधी
कार्या. फोन : 0755 4220549

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन : 07324 226566

सह सम्पादक
मुकेश कुमार यादव
फोन : 9826183095

सदस्यता
एक प्रति – 20–00 रू.
वार्षिक – 200–00 रू.
आजीवन – 1000–00 रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	500 रू.
पूर्ण पृष्ठ (अन्दर)	400 रू.
आधा पृष्ठ (अन्दर का)	250 रू.
चौथाई पृष्ठ	150 रू.

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	4
जीवित कौन	6
वेदों की सूक्तियां	7
वर्ष प्रतिपदा, नवसंवत्सर आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर	8
एक दृष्टि में मनुष्य	12
भारतीय परम्परा से दूर होते लोग	14
एक शिक्षादायक घटना	17
दलित मुस्लिम गठजोड़ : दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षडयन्त्र	18
जरा सोचें, संभले और करें	20
वैदिक ज्ञान प्रश्नावली	21
108 कुण्डीय विश्व कल्याण महायज्ञ....	23
अन्तर्वेलिया में तीन दिवसीय प्रचार	25
टिगरिया गौशाला में अंतरंग बैठक सम्पन्न	26

अप्रैल माह के पर्व त्यौहार एवं जयन्ती

■ गुरू तेग बहादुर जयंती	5
■ गुरू अर्जुन देव जयंती, विश्व स्वास्थ्य दिवस	7
■ विश्व बंजारा दिवस	8
■ डॉ. हेनीमेन जयंती	10
■ जलियांवाला बाग दिवस	13
■ वैशाखी पर्व, डॉ. अम्बेडकर जयंती	14
■ गुरू अंगद देव जयंती, छत्रपति शिवाजी जयंती	17
■ आद्य शंकराचार्य जयंती	20
■ विश्व पृथ्वी दिवस	22
■ विश्व मलेरिया दिवस	25
■ गुरू अमरदास जयंती	29
■ महर्षि भृगु जयंती	30

सम्पादकीय –

इतिहास में अनेक घटनाऐं मिलती हैं जिनके कारण जाति, समाज, संगठन, राष्ट्र को बड़ी–बड़ी हानियॉ महत्वाकांक्षी येष्णाओं के कारण उठाना पड़ी।

अपने छोटे से निज स्वार्थ के सामने व्यक्ति या कुछ संगठन बड़ी से बड़ी हानि को महत्व नहीं देते हैं। कहा गया **"स्वार्थी दोषा न पश्यति"** स्वार्थी को दोष नहीं दोखते।

समाज सेवा, आध्यात्म या रांजनीति में तीनों में आज बड़ी स्पर्धा चल रही है। इस स्पर्धा का मुख्य कारण अपने या अपने संगठन का अहम है जिसे स्वाभिमान का रूप दिया जा रहा है।

दुनिया पागल हो रही है, भ्रम में या अहम में इन दोनों स्थितियों में मुख्य प्रयोजन गौण होकर ये अपने हित के ही भाव प्रमुख हो जाते है। कितनी हास्यास्पद स्थिति है कि आप कोई सेवा करना चाहते हैं पर अपने बैनर से यह धारणा के साथ कि नाम मेरा या मेरी संस्था का जहॉ हो वही सेवा है दूसरा कोई कितनी भी अच्छी व त्याग भाव से करें वही ठीक नहीं। राजनीति में तो यह जन्म सिद्ध अधिकार हो गया है कि जो कार्य हमारा दल करेगा वही सही है दूसरा कोई कितना भी अच्छा करे, हमें उसकी सराहना या सहयोग नहीं करना है उसकी त्रुटियॉ ढूँढ़कर उसके कार्यको निरर्थक व अनुचित सिद्ध करना है। वह कितना भी अच्छा करे किन्तु ठीक नहीं है क्योंकि वह हम नहीं कोई दूसरा पक्ष कर रहा है। हम यदि उसके कार्य की निन्दा नहीं करेगें तो उसका लाभ उस पक्ष को मिलेगा और उससे उसका वोट बैंक बढ़ेगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसीलिये समाज के मध्य आने वाले व्यक्ति को पहले उस योग्य बनने का सूत्र दिया। जिसमें कहा व्यक्ति को शारीरिक, आत्मिक और फिर कहा सामाजिक उन्नति करना चाहिए। आज समाज व राष्ट्र के लिए काम करने वालों की भीड़ है परन्तु इस भीड़ में नगण्य सी संख्या उनकी है जो ईमानदारी से, समर्पण भाव से सेवाभाव लेकर आते हैं। अन्यथा अपना कद, अपनी उन्नति, अपना स्वार्थ कहॉ से कब सिद्ध होगा, जल्दी होगा उस संगठन से जुड़ते हैं। त्याग भाव की कमी है जबकि विष्व प्रसिद्ध विद्वान चाणक्य कहते हैं –

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्
ग्रामं जनपदस्यार्थ आत्मस्यार्थे पथिवीं त्यजेत्।।

त्याग का कितना महत्व है, किस प्रकार त्याग होना चाहिए उसका वर्णन कुछ ऐसे किया है – कुल के लाभ के लिए व्यक्तिगत हित त्याग देना चाहिए। ग्राम के लाभ के लिए पारीवारिक कुल का हित त्याग देवें, राष्ट्र के लिए ग्राम का हित और आत्मोन्नति व लाभ के लिये पथिवी (समस्त संसार के सुख साधनों) का भी त्याग कर देना चाहिए।

इदन्नमम् का भाव त्याग का परिचायक है जो स्वर्ग और सर्वे भवन्तु सुखिनः का आधार है। इसके विपरीत मम् लगाव, आसक्ति भाव है इसमें स्वार्थ है नर्क का मार्ग है।

आज मम् की भावना से समाज कष्टों के अन्धेरे में घिरते जा रहा है। अपना अहम्, अपना नाम, अपनी जीत के लिए वह कुछ भी, किसी भी हद तक भी पतित होने को तत्पर है।

इस देष की संस्कति बिगाड़ने का प्रयास तेजी से हो रहा है, धर्म से मजहब की ओर लाखों व्यक्तियों को लाया जा रहा है, तेजी से संख्या बढ़ाकर राष्ट्र पर कब्जा करने का षड़यन्त्र योजनांबद्ध तरीके से चल रहा है।

विष्व के अनेक देष पहले इस्लाम या क्रिष्चियन नहीं थे वहॉ किसी अन्य विचारधारा का साम्राज्य था परन्तु जब उनकी संख्या 20 % हो गई तो 25 वर्ष में बढ़ाकर अपना प्रभुत्व स्थापित कर अपनी विचारधारा का देष बना दिया। एक सर्वे के अनुसार हिन्दुओं की आबादी कुछ वर्षों में 1.2 % उतने ही समय में मुस्लिम आबादी 7% अधिक हो जाती है। इस महत्वपूर्ण विषय पर कुछ राष्ट्र चिन्तकों का ध्यान गया और उन्होंने जनसंख्या पर नियन्त्रण करने के लिए महत्वपूर्ण व सराहनीय है किन्तु कुर्सी व सत्ता के भेड़िये इसका विरोध करेगें। क्योंकि वर्ग विषेष के वकील बनकर उनकी सहानुभूति अर्जित करने का अवसर क्यों छोड़ेगें ? अपनी हवस के सामने संस्कृति या राष्ट्र कोई महत्व नहीं रखता।

इस संकुचित और दूषित विचारधारा का प्रत्यक्ष प्रमाण है प्रधानमन्त्री मोदी द्वारा स्वच्छता का नारा दिया, बड़े स्तर पर कार्य प्रारंभ किया, उसका बहुत कुछ प्रभाव देखने को मिल रहा है।, कचरा ढ़ोने के लिए वाहन रेकार्ड सुनाते हुए गॉव–गॉव गली–गली में चुका रहे हैं। यह कितना बड़ा और प्रषंसनीय कार्य है। इसका लाभ सबको मिलेगा किन्तु विपक्ष ने इसके लिए कोई प्रषंसा की हो, सहयोग दिया हो, ऐसा कुछ देखने, सुनने में नहीं आया। क्योंकि यह कार्य सत्तारूढ़ पार्टी कर रही है, हम उसे अच्छा क्यों मानें ? देष में भौगोलिक रूप से 1947 में हम स्वतन्त्र हो गए किन्तु हम मानसिक रूप से अभी परतन्त्र है। हम किसी संगठन, जाति या पार्टी के नुमाइन्दें के रूप में उनकी ही मान्यता और उनकी विचारधारा से बन्धे हैं। इसलिए हमारी संस्कृति या राष्ट्र की कितनी भी क्षति हो रही हो हम अपनी पार्टी के बैनर को ही महत्व देगें। कष्मीर, केरल, मिजोरम, नागालैण्ड इनसे सनातन धर्मियों का पलायन हो गया। इस पर किसी राजनैतिक दल ने खुलकर प्रयास नहीं किया। अब कुछ आषायें बनी हैं तो दुर्भाग्य इस देष का, इस सनातन संस्कृति के सदस्यों का जो इसे सहयोग नहीं करेगें वे मात्र कुर्सी बचाने में लगे हैं, उनके आगे स्वार्थ सबसे बड़ा लक्ष्य बना हुआ है। इसलिए कहा **''स्वार्थी दोषां न पश्यति''**

जल ही जीवन है – इसका सदुपयोग करें।

– जनहित में प्रकाशित

जीवित कौन ?

इसका सामान्य उत्तर तो है स्वांसें जिसकी जब तक चल रही तब तक वह जीवित है।

इस मान्यता के अनुसार पशु, पक्षी, कीट, पतंग और समस्त योनियों के प्राणी जिनकी स्वांसें चल रही सभी जीवित है। किन्तु आचार्य चाणक्य का तात्पर्य मात्र भौतिक शरीर की चैतन्य अवस्था से नहीं है। यहॉ जीने का अर्थ मानव जीवन की महानता और उसकी सार्थकता से है।

अन्तर है बड़ा स्वांस लेने और जीने में।
जैसे होता है फर्क पत्थर और हीरे में।।

इसलिए अनमोल जीवन को हीरा बनाना है, अज्ञानता से जड़, पत्थर नहीं।

मानव जीवन की सार्थकता के लिए आचार्य चाणक्य कहते हैं जिसका जीवन गुण और धर्म से सुसज्जित होता है, वही जीवन है इनसे ही जीवन की सार्थकता मानी गई है। गुण और धर्म से रहित जीवन को निष्प्रयोजन अर्थात् निरर्थक कहा गया।

सजीवती गुणा यस्य, यस्य धर्मः स जीवती।
गुण धर्म विहीनस्य, जीवितं निष्प्रयोजनम्।।

गुणवान, मनुष्य का जीवन एक आदर्श, अनुकरणीय और प्रशंसनीय होता है। गुणों से पूर्ण जीवन ही संसार में अपनी अच्छी ख्याति अर्जित कर पहचान बनाता है। गुण जीवन उन्नति का और अवगुण पतन का कारण बनता है। महात्मा विदुरजी ने इसे और विस्तार से बताते हुए गुणों से पूर्ण जीवन को एक दीपक के समान प्रकाशवान जीवन बताया। इसके अतिरिक्त उन्होंने ८ गुणों को जीवन का अलंकार बताया। ये ८ गुण इस प्रकार हैं :–

अष्टौ गुणाः पुरूषो दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च पराक्रमाश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्तिः कृतज्ञता च।।

श्लोक का भावार्थ है – मनुष्य को **ज्ञानवान** (कल्याणकारी ज्ञान होने से) ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय पर नियन्त्रण उनकी पवित्रता रखने से

अच्छे कुल में जन्म लेने से, अच्छे आर्ष ग्रंथों के श्रवण से, पराक्रमी जीवन से, कम आवश्यकतानुसार पुरूषार्थी बोलना, अधिक न बोलने से, अपनी सीमा, क्षमता के अनुसार दान देने से और किसी के द्वारा किये गये उपकार के प्रति कृतज्ञता, एहसान मानने का भाव रखना। इन आठ गुणों से मनुष्य जीवन दीपक के समान चमकीला होता है।

जीवन के इन स्वर्णिम सिद्धान्तों से भटक कर आज के मनुष्य के जीवन जीने का ढ़ंग चारवाक की नीति के अनुसार हो गया है। चारवाक नास्तिक मत है, पुर्नजन्म में विश्वास नहीं रखता जो कुछ है बस वर्तमान ही सबकुछ है, इसमें जो करना हो वह कर लो, इसलिए लिखा –

यावज्जीवेत् सुखं जिवेत्, ऋणंकृत्वा घृतं पिवेत्।।
भस्मि भूतस्य देहस्य, पुनरागमन कुतः।।

उसका कहना था जब तक जिये सुख से जियें, उधार लेकर भी घी खाना हो तो खाओ। यह शरीर जल जायेगा, तो सब समाप्त है फिर कहॉ आना है ?

यह वृत्ती मानव जीवन जीने के नहीं है यह पशुओं की प्रवृत्ती है।

परन्तु मानवीय जीवन का महत्व तो उपरोक्त गुण, धर्म से युक्त जीवन से ही है वही जीवन, जीवन है, ऐसे जीवन की सार्थकता में ये पंक्तियॉ बहुत उचित प्रतीत होती हैं।

यूॅ तो जीने के लिए लोग जिया करते हैं।
लाभ जीवन का फिर भी नहीं लिया करते हैं।।
मृत्यु से पहले तो मरते हैं हजारों।
मगर जीते वही जो मरकर जिया करते हैं।।

– प्रकाश आर्य, महू

वेदों की सूक्तियां

1. **तमेव विदित्वाति मृत्यु मेति।** – यजु. 31/18
   उस ब्रह्म को जानने से ही मनुष्य मृत्यु से छूट जाता है।
2. **ऋतस्य पथि वेधा अपायि।** – ऋ. 6/44/8
   सत्य मार्ग में परमात्मा रक्षा करते हैं।
3. **क्षत्रेणात्मानं परिधापयाथः।** – अथ. 12/3/59
   क्षात्रबल से अपनी रक्षा कर।
4. **परे मृत्यो अनुपरेहि।** – यजु. 35/7
   मृत्यु को परे धकेल दो।
5. **अतप्ततनूर्नतदामो अश्नुतो।** – ऋ. 9/83/1
   बिना तपस्या किये हुए उस प्रभु के स्वरूप को जीव नहीं जान सकता।

वर्ष प्रतिपदा, नवसंवत्सर आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर

आर्य समाज असम्प्रदायिक सनातन धर्म विचारधारा का पोशक अन्धविश्वास और सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला एक संगठन है।

धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक मान्यताएं प्रायः महापुरूषों के विचारों, जीवनी या उनके उपदेशों पर आधारित है। इस प्रकार की विचारधाराओं से सम्बन्धित तथाकथित विचारधारा जिसे धर्म कहते हैं वे वास्तव में सम्प्रदाय है मत–मतान्तर है। आर्य समाज की मान्यता का आधार परमात्मा प्रदत्त ज्ञान वेद है, धर्म का आधार है इसी ईश्वरीय पवित्र ज्ञान, इसी वेद का प्रचार प्रसार आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। यह समस्त विश्व ईश्वर की सत्ता के अधीन है, समस्त प्राणीमात्र और ब्रह्माण्ड का स्वामी एक ही ईश्वर है। वह ईश्वर अनन्त, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक है वही हमारा माता–पिता, बन्धु, सखा, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। उसकी कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है। ईश्वर के संबंध में आर्य समाज की यह मान्यता है।

धर्म और परमात्मा के संबंध में व्याप्त अन्धविश्वास और अज्ञानता को दूर करने के लिए तथा सत्य सनातन धर्म के मूल सिद्धान्तों का परिचय जन साधारण को करवाने हेतु आर्य समाज की स्थापना की गई। आर्य समाज किसी व्यक्ति, महापुरूष या कुछ लोगों के द्वारा बनाई गई किसी नई विचार धारा वाला संगठन नहीं है। वर्ष प्रतिपदा सन् 1975 में इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द के द्वारा की गई।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने इसकी स्थापना के पूर्व ही यह स्पष्ट कर दिया था कि ईश्वरीय ज्ञान वेद में सबकुछ है, वह ज्ञान का पूर्ण भण्डार है, किसी को अपनी ओर से कुछ कहने या नया जोड़ने की आवश्यकता ही नहीं है। यह सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, इसे पढ़ना पढ़ाना ही मनुष्य का परम धर्म है। इसलिए आर्य समाज की मान्यता का आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद है वही संसार की प्रथम संस्कृति व प्रथम ज्ञान है जो मानवमात्र के लिए है।

आर्य समाज द्वारा समाज में व्याप्त पाखण्ड, अवैज्ञानिक मान्यताओं, अन्धविश्वास व अनेक बुराईयों का खुलकर विरोध किया, उनकी कटु आलोचना की, अज्ञानता पूर्ण मान्यता से समाज को दूर कर सही मार्ग दिखाकर सचेत किया।

जिन समाज विरोधी कार्यों का आर्य समाज ने विरोध किया उनमें प्रमुख हैं, सतिप्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, छुआछूत, जातिप्रथा, बलिप्रथा, मृतक श्राद्ध, गौ हत्या, एक के स्थान पर अनेक ईश्वर की मान्यता आदि है। जिनके लिए प्रयास किये उनमें से प्रमुख हैं, स्त्री जाति व शूद्रों को शिक्षा का अधिकार, वेद पढ़ने का सबको अधिकार, विधवा विवाह, शुद्धि संस्कार, हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के लिए देश को आजादी के लिए, गौ रक्षा के लिए, विद्या के प्रचार के लिए, सनातन संस्कृति की रक्षा आदि है।

आर्य समाज जिन सिद्धान्तों को मानता है उसमें हम अन्य मनुष्यों के बारे में भी सोचें, सबकी उन्नति का सन्देश महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के नियमों में दर्शाया है – **''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।''**

ईश्वरीय ज्ञान सबके लिए है, इस संगठन का उद्देश्य भी जाति, भाषा, स्थान के कारण संकुचित न हो, इसलिए नियम बनाया – **''संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।''** संसार में क्लेश का कारण अज्ञान है अज्ञानता के कारण ही मनुष्य का शोषण हो रहा है वह दुःखी है। समाज की इस महान कमी को दूर करने के लिए सबको दुःखों से छुटकारा दिलवाने के लिए नियम बनाया – ''अविद्या का नाश और विद्या की उन्नति करनी चाहिए।''

धर्म पालन में प्रार्थना, उपासना, स्वाध्याय यह तो व्यक्तिगत उन्नति के लिए है ही किन्तु परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति अपने कर्मव्यों को करना भी प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। इस प्रकार धर्म का पूर्ण स्वरूप आर्य समाज की मान्यता है।

संसार में मानव संगठन, व्यक्ति, परिवार व समाज में तीन भागों में बंटा हुआ है। इन तीनों का ही घनिष्ट संबंध एक–दूसरे से है, एक–दूसरे को आपस में इनकी आवश्यकता सदा रही है, सदा रहेगी। इन तीनों की उन्नति से ही एक स्वस्थ व पूर्ण सुखी स्वरूप समाज का हो सकता है।

इसी भावना से आर्य समाज नियमों में शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करने का सन्देश दिया है।

आर्य समाज, समाज के प्रहरी के रूप में कार्यरत् संगठन है जो सामाजिक दोषों का विरोध और समस्त मानव को संगठित करने के लिए ईश्वर के ज्ञान वेद का प्रचारक है।

समाज की शान्ति व ज्वलन्त समस्या का समाधान केवल आर्य समाज की मान्यता के द्वारा ही संभव है, आज संसार विभिन्न समस्याओं, विवादों, घटनाओं और मनुष्य से मनुष्य के बढ़ते मन भेदों से परेशान हैं।

इन सबका कारण वैचारिक भिन्नता है। धर्म और ईश्वर के नाम पर समाज बंटा हुआ है। एक धर्म और एक ईश्वर के स्थान पर अनेक मत, मजहब, सम्प्रदायों ने धर्म व ईश्वर को बांट दिया। जो धर्म सबको एक करने का सन्देश देता है उसके नाम पर आगजनी, लूट, हत्यायें हो रही हैं। जो ईश्वर सबका एक ही पिता है, सबका वही एक रक्षक है उसके एक रूप को सम्प्रदाय व भिन्न–भिन्न विचारों ने अनेक करके समाज की आपस में दूरी बढ़ा दी।

दो सम्प्रदायों की एकता की छोड़ों, यहां तो एक ही सम्प्रदाय में भेद है। मुस्लिम, सिया, सुन्नी, ईसाई, प्रोटेस्टियन व रोमन केथोलिक, जैन श्वैताम्बर, दिगम्बर और हिन्दू समाज कितने हिस्सों में जाति में ईश्वर, पूजा पद्धति, भगवान, गुरूओं के नाम पर बंटा है, उसकी तो गिनती ही नहीं है।

क्या ये सभी मान्यताएं ईश्वर और धर्म के नाम पर एक हो सकेगी ? क्या इन अलग–अलग मान्यताओं के कारण मानव संगठित हो सकेगा ? क्या कभी संसार में इन विभिन्न विचारों के रहते हुए शान्ति स्थापित हो सकेगी ? क्या सर्वे भवन्तु सुखिनः का सन्देश पूर्ण हो सकेगा ?

इन सबका उत्तर है – कभी नहीं। क्यों ? तो इसका सीधा सा उत्तर है आज सनातन विचारधारा को छोड़कर जितनी भी विचारधाराएं धर्म और ईश्वर को लेकर समाज में प्रचलित है वे सभी मानव प्रदत्त हैं ? उनका उद्‌गत किसी मानवीय ज्ञान के आधार पर हुआ है। कोई महापुरूष ही उनके अस्तित्व का कारण है जैसे मुस्लिम सम्प्रदाय मोहम्मद सा. से क्रिश्चियन ईशा मसीह से, जैन महावीर स्वामी, बौद्ध गौतम बुद्ध, सिक्ख गुरूनानकदेव जी आदि–आदि।

इस प्रकार की मान्यता वाले या उनके अनुयायी अपने–अपने महापुरूषों को ही सबसे श्रेष्ठ मानते हैं उन पर अटूट विश्वास रखते हैं तभी तो वे उससे जुड़े हैं। वे अन्य किसी महापुरूष या मजहब की बात को स्वीकार नहीं करते। ऊपरी तौर पर भाषण, लेखों और मानवीय व्यवहारिक औपचारिकताओं के कारण भले ही यह प्रदर्शन करते हो कि वे एक है परन्तु वास्तविकता इससे भिन्न है। यदि एक है तो फिर अलग से अपनी पहचान क्यों रखता है फिर मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, गिरजाघर का अन्तर उसके जीवन में क्यों रहता है ?

यह कभी संभव नहीं है कि विभिन्न विचारों के आचरण से भी एकता हो सके। समाज की बात तो छोड़ो परिवारों में पति–पत्नि में भी यदि वैचारिक भिन्नता है तो उनमें भी दूरी हो जाती है, कलह और अशान्ति बनी रहती है।

इसलिए मनुष्य, मनुष्य में छोटा बड़ा होने का फैसला करना बड़ा कठिन कार्य है, कठिन ही नहीं असंभव है। क्योंकि कोई एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय की बात को मानता है तो वह अपनी विचारधारा वाले सम्प्रदाय को छोटा या उसमें किसी कमी का होना पायेगा, जबकि ऐसा कोई भी करने को तैयार नहीं।

इसलिए साम्प्रदायिक विचारों के रहते कभी एकता संगठन, शान्ति सिर्फ कल्पना ही रहेगी।

किन्तु यदि इन सबसे ऊपर उस परम शक्ति परमात्मा के विचार पर यदि सोचें तो फिर यह संभव हो सकता है।

धर्म सनातन ईश्वर प्रदत्त है, ईश्वर प्रदत्त समस्त वस्तु, व्यवस्था, सबके लिए और सदा से सदा के लिए है। सूर्य, चन्द्रमा, हवा, पानी, धरती, वनस्पतियां ये सब ईश्वर के द्वारा प्रदान किए हैं, मानव मात्र के लिए हैं सदा से हैं, सदा रहेगें, इसलिए सनातन हैं। उसी प्रकार वेद भी ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है, सारे मत–मतान्तरों, मजहबों, महापुरूषों के जन्म के पूर्व से हैं। सृष्टि के प्रारंभ से हैं, प्रथम ज्ञान, प्रथम संस्कृति हैं, इतना ही नहीं धर्म का आधार भी वेद हैं। वेद सनातन हैं इसलिए धर्म भी सनातन है, जो किसी व्यक्ति या महापुरूष के जीवन पर, ज्ञान के आधार पर नहीं है, जिसमें कोई इतिहास भी नहीं लिखा है, विशुद्ध मानव कल्याण व प्राणिमात्र के लिए है।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

एक दृष्टि में मनुष्य

ये बदलती दुनियॉं
पता नहीं जायेगी कहॉं ?
चिन्ता में डूबा है आज सारा जहॉं।

पशु पक्षियों की एक महती सभा हो रही थी।
जनता मानवीय अत्याचारों पर रो रही थी।।

विषय था, आदमी हमारी पहचान पर अतिक्रमण कर रहा है,
हर पशु पक्षी, इससे ड्र रहा है।।

इसलिए, गंभीरता से लोमड़ी बोली,
कई बातों पर जुबान खोली।
ये आदमी अपनी पहचान और कद हमसे बढ़ाता है,
तारीफ करने में उदाहरण हमारा ही बताता है।।

वीरता की मिसाल शेर से, नामों में सिंह धरता है।
तेज दौड़ने और ऑंख की खूबसूरती की तुलना हिरण से करता है।

मीठी आवाज कोयल सी बताकर
शरीर बड़प्पन हाथी सां दिखाकर
अपनी तारीफों के कसीदे बुनता है
हम पशु पक्षियों गुण बड़ी खुशी से गिनता है।

आदतों में भी अपनी परिवर्तन ला रहा
आदमी आज हमारी श्रेणी में आ रहा।

चापलूसी में भाई कुत्ते को पीछे छोड़ा है,
धोखा देने में तो मेरा भी रेकार्ड तोड़ा है।

स्वार्थ में ऑंख मूंदकर चल रहा।
उल्लू जी की श्रेणी में ही पल रहा।।

गिद्ध सी लालची दृष्टि. इसमें समायी है,
गन्दगी में भी कौवे सी वृत्ति पायी है।

जहर तो इसमें सांप से ज्यादा पाया जाता है,
आस्तिन का सांप इसे कहा जाता है।

चीड़े सी कामुकता में ही डूबा है,
रात–दिन विलासिता को ही भोगा है।।

हमारी, इतनी समानता आज का आदमी अपने में ला रहा है
आदमियत छोड़ हमारी ओर आ रहा है।

पर इतने पर भी वह बड़ा कहलाता है,
हमारा नंबर दोयम दर्जे पर आता है।
ये तो सरासर ना इंसाफी और पक्षपात है,
पूछो भगवान से किस मायने में आदमी की हमसे बड़ी जात है।।

ये भेदभाव मिटना जरूरी है,
वर्ना अगला कदम हमारी मजबूरी है
आज इसने अपनी पहचान खो और हमारी ओर आ रहा है,
इससे हमारे अस्तित्व पर आज खतरा बढ़ता जा रहा है।

इस तरह तो हमारी कौम बदनाम हो जायेगी।
आदमी की तरह ही आदतें हममें आयेगीं।।

इसलिए प्रस्ताव करते हैं– आदमी मानवीय सीमायें न तोड़े
अपने को पशु–पक्षी से न जोड़े
संसार की श्रेष्ठ योनी का क्यों कर रहा तिरस्कार,
अकल दे भगवान इसे, करे अपनी करनी पर विचार।।

वर्ना ये बदलती दुनिया पता नहीं जायेगी कहाँ,
चिन्ता में डूबा है आज सारा जहाँ।।

– प्रकाश आर्य, महू

भारतीय परम्परा से दूर होते लोग ?

प्रायः अधिकांश व्यक्ति एक जनवरी को नये साल का स्वागत करने को आतुर रहते हैं, एक–दूसरे को हैप्पी न्यू ईयर कहते नहीं थकते, हर वर्ष नव वर्ष को यादगार बनाने के लिए कई दिनों पहले तैयारियॉ शुरू कर देते हैं। बढ़िया पार्टियां, पब, डिस्को हाल, बड़े होस्टलों को पहले से बुक करवाकर शराब, मांस व अन्य ड्रग्स की भरपूर व्यवस्था करने में कोई कसर नहीं छोड़ते। लड़कों के लिए लड़कियॉ, लड़कियों के लिए लड़के नशे में चूर डिस्को बार में डांस, सड़कों पर झूमते गाते नाचते हुड़दंगी नजर आते हैं, जो लड़की ऐसे माहौल से दूर रहना चाहती है उनको छेड़ते हुए "निरंकुश वीर" कहलाने में अपनी गरिमा समझते हैं, न समाज का डर, न संस्कारों की चिन्ता अनुशासन हीनता सभी तरफ अराजकता, पशुवत व्यवहार, मन में आये जो करें, "जिन्दगी एक सफर है सुहाना, यहां कल क्या हो किसने जाना" के गीत को अपनी नये भारत की सोच को अपने अर्थों में जीना, कल की चिन्ता छोड़ो, कल की बात पुरानी, नये दौर में लिखेगें हम नई प्रेम कहानी हम हैं हिन्दुस्तानी" के अनुसार हमारे पूर्वज दकियानूसी विचारों में जी रहे थे। पर हम तो आधुनिक भारत में जी रहे हैं। इसलिए अतिशीघ्र इस देश को 22 वीं सदी में पहुंचाकर इसकी गरिमा संस्कार सदाचार व सद्व्यवहार को भुलाकर आधुनिकता के नाम पर उन्मुक्त जीवन शैली के द्वारा जितना जल्दी हो सके रसातल को पहुंचाना है, और फिर नये साल का जश्न मनाना है। बस यही तो है नया साल।

बच्चों के दिमाग में यह बात पैदा करना की शांताक्लोज आयेगा और हमें टॉफी उपहार में देगा, ऐसा काल्पनिक शान्ताक्लोज के द्वारा उपहार बांटकर बच्चों के कोमल मस्तिष्क में लालच के भाव पैदा कर अन्धविश्वास को ठुसना यही तो तो है नये साल का जश्न।

रावण (विदेशी विकृत संस्कृति) ने सीता (भारतीय संस्कृति) का हरण किया था, उसको भारत के संस्कारों ने धराशाई किया आज विदेशी संस्कृति भारतीय संस्कृति को हरण नहीं कर रही है, अपितु हम स्वयं ही अपनी संस्कृति को मिटाने के लिए आत्म समर्पण कर रहे हैं।

1000 साल की गुलामी में जोर जबरदस्ती के बाद भी हमारा धार्मिक सामाजिक चारित्रिक पतन नहीं हुआ। जितना आजादी के सालों में हुआ है, हम विदेशी मानसिक गुलामी की दास्तां को स्वीकार करते हुए, सह जीवन पद्धति और समलैंगिक विकृति जैसे कुसंस्कारों की और अग्रसर होते हुए अपने सुसंस्कारों को पैरों तले रौंधते हुए स्वतन्त्रता के नाम पर अपने आप को धन्य समझने लगे है।

लड़कियों के छोटे व शरीर से चिपके कपड़े पहनना, बलात्कार व बलात्कार के बाद हत्या, ये संस्कार कहां से आये ? पुरूषों में मानसिक विकृति पैदा करना किसकी देन है ? गर्लफ्रेंड, बॉयफ्रेंड के साथ एकान्त में

खुले विचारों के नाम पर व्यभिचार करना, यह किसकी देन है ऐसे अवसर पर वहां जो होता है। वहां क्या सिर्फ पुरूष दोषी होते हैं, यह एकान्त सेवन की सीख किसकी देन है ? विदेशी संस्कारों को भारत पर थोपने के लिए प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा धन के बल पर इतना प्रचारित किया जा रहा है, कि ऐसे शर्मनाक मानबिन्दुओं को सहज मानकर युवाओं को भटकाने का यह प्रयास किसकी देन है ? छोटे बड़े शहरों से निकल कर ग्रामीण क्षेत्रों में भी यह विकृति पहुंचने लगी है, यह किसकी देन है ? एक कवि ने बहुत सुन्दर कहा "बरबाद चमन के करने को जब एक ही उल्लु काफी है, हर साख पे उल्लु बैठा है, अंजाम गुलिस्तां क्या होगा ?" हमारी भाषा को पैरों तले रौंधने में अंग्रेजियत की मानसिकता वाले राष्ट्रभक्त नेताओं व फिल्मी दुनिया के लोगों ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी है, वोट मांगते हिन्दी में और बहस से लगता ही नहीं कि यह राष्ट्रभाषा हिन्दी वाली सांसद है, फिल्म वाले हिन्दी फिल्मों में आधी अधुरी हिन्दी का प्रयोग करते हैं और साक्षात्कार या उत्सवी मंचों पर अंग्रेजी में जुगाली करते रहते हैं। मालवा में एक कहावत है – माल खाये माटी (पति) और गीत गाये बिरा (भाई) के।

ये कुछ अंग्रेजी द लोग नमक अन्न भारत का खाते हैं, भारत की मिट्टी में पले, बड़े रंगों में भारत का खून पर गीत गायेगें अंग्रेजी के ऐसे पढ़े लिखे समझदार ना समझों की गिनती भी देश की संख्या के मान से कोई ज्यादा नहीं है, पर लगे हुए हैं मुन्ना भाई।

सारी दुनिया में छोटे बड़े कोई 204 देश हैं। सभी की अपनी–अपनी भाषा, अपनी–अपनी संस्कृति है, सभी देशों व प्रदेशों के अपने–अपने नव वर्ष हैं। हमारे भारत में भी छत्तीस तरह के नव वर्ष मनाये जाते हैं, पर मुख्य रूप से चैत्र सुदि एकम या गुड़ी पड़वा भारत का नव वर्ष है। इसी दिन नव संवत्सर प्रारंभ होता है दिन, महिना, समय की गणना निहीत है, इसलिए इसे संवत्सर कहते हैं, सृष्टिक्रम के अनुसार ब्रह्माजी ने इसी दिन सृष्टि की रचना आरम्भ की थी, सतयुग का प्रारंभ भी इसी दिन माना जाता है, मालवा प्रदेश के सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन से अपना संवत् प्रारंभ किया था। इसीलिए इसे मनाने के लिए त्याग के प्रतीक पीले वस्त्र धारण करना, उगते सूर्य को अर्ध्य देना, प्रातःकाल वायु शुद्धि के लिए देशी गाय के शुद्ध घी से हवन करना, मानसिक शान्ति के लिए मन्त्र जाप व पूजन करना देव दर्शन करना, अपने से बड़ों के चरणों में झुककर प्रणाम कर आशीर्वाद लेना शामिल है और ये सारे कार्य शालिनता लिए हुए होते हैं। यह संस्कृति सभ्य समाज में संस्कार युक्त जीवनशैली सिखने वाले इन तरीकों से ओत प्रोत है।

असल में हम नकलची ज्यादा होते जा रहे है और सारी दुनिया एक है, इस नाम पर अपने संस्कार खोते जा रहे हैं। देखादेखी मदर डे, फादर डे,, टीचर डे, वेलेनटाईन डे और पता नहीं क्या–क्या डे मनाते हैं। जबकि हमारे यहां इन डे को मनाने का कोई औचित्य ही नहीं है, हमारे यहां तो सूय

की पहली किरण के साथ प्रतिदिन ही यह डे मनाये जाने का विधान है।

इसी तरह नया साल मनाने की भी हमने नकल शुरू कर दी, क्या है नया साल ? देखादेखी हुड़दंगी बनते जा रहे हैं। यदि बुद्धि को थोड़ा सा भी जोर देकर विचार करेगें, तो पता चलेगा कि हमारे जीवन का प्रतिदिन ही नहीं प्रतिक्षण ही नया साल है क्योंकि जो पल निकल गया वह पल जीवन में कभी भी नहीं आयेगा।

जो ये नववर्ष है केवल समय को मापने का एक तरीका है, यदि यह तिथि नहीं होती तो कितना समय निकल गया, कितना बाकी है, इसकी संख्या कैसे मालूम पड़ती, हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों का विज्ञान आज के विज्ञान से कहीं अधिक विकसित था। उनकी काल गणना का आज भी कोई तोड़ नहीं है, तिथी, वार, ग्रह, नक्षण, महिने आदि का समयबद्ध निर्माण कितना आचश्चर्यजनक है। केवल अमावस्या को ही सूर्य ग्रहण व पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण होता है। 12 राशि पर सूर्य की चाल, सवा दिन में एक राशि पर चन्द्रमा और समयबद्ध तरीके से सारे ग्रह नक्षत्रों की चाल लाखों वर्ष पहले ही दुनिया को बता दी थी।

हमारे त्यौहार, तिथियों से आते हैं, कि तारीखों से आते हैं ? रामनवमी, रक्षाबन्धन, कृष्ण जन्माष्टमी, नवरात्रि, दशहरा, दीपावली, अमावस्या, पूर्णिमा, इनकी कोई तारीख निश्चित है क्या ? समुद्र में ज्वार भाटा पूर्णिमा और अमावस्या को ही आता है, क्या इनकी तारीख भी निश्चित है ? यदि तारीख ही सही है है तो फिर ज्वार भाटा तारीख से ही आना चाहिए। 30 तारीख को अमावस्या, 15 तारीख को पूर्णिमा आना चाहिए, हम त्यौहारों को भी तारीख से पहचानने लगे हैं, यदि यह सब तारीख से नहीं है तो फिर हम तारीखों के पीछे क्यों पगलाये जा रहे हैं ?

जब सामान्य हवा चलती है तो उसमें हलके पुलके सामान उड़ते हैं, हवा और तेज होती है तो और बड़ा सामान उड़ता है और जब अंधड़ चलता है तो इसमें बड़े–बड़े विद्वान, मठाधीश, भारतीय संस्कृति के रक्षक व ज्योतिषी भी उड़ने लगे हैं, अपने ज्योतिष ज्ञान का महत्व हिन्दी महिनों से है उसकी जगह अंग्रेजी महीनों से इस महीनें कितने रविवार, सोमवार, मंगलवार आयेगें तो ये घट जायेगा वो बढ़ जायेगा से फलित ज्योतिष की गणना करने लगें। इस आंधी में कुछ सिरफिरे लोग ही बचे हैं, जो चट्टान की जगह अपनी मजबूत है, जो उड़ गये हैं वे इन अड़े हुवो को मूर्ख समझकर अपने दिमागी दिवालियेपन का परिचय दे रहे हैं। पर अभी पिछले कुछ वर्षों से आशा की किरण दिखाई देने लगी है, कुछ संस्थाएँ चेत्र वर्ष प्रतिपदा को नववर्ष के रूप में अच्छे भव्य तरीके से मनाने लगी है।

अपने घर की रूखी–सुखी खाकर इतराना गर्व की बात तो हो सकती है, पर दूसरे की झूठी पत्तल चाटकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करने वाले को हमारा सलाम।

– रमेशचन्द्र शर्मा (इकलेरा वाले) आर्य समाज, कानड़

एक शिक्षादायक घटना

राजा भोज बड़े उदार और दानी थे। एक बार की बात है कि एक गरीब विद्वान कवि चोर ने राजा के घर चोरी करने की ठानी। रात में जब राजा सोया हुआ था, तो उसके पलंग के चार पांवों के नीचे चार सोने की ईंटें रखी हुई थी। विद्वान कवि चोर ने सोचा कि किसी प्रकार इन ईंटों को चुरा लिया जाए। विद्वान को सदा पाप से भय वा संकोच होता है। इस कारण वह सारी रात इसी उधेड़ बुन में लगा रहा कि इन सोने की ईंटों को कैसे उठाया जाये ?

सोचते–सोचते चार बज गये। राजा भोज का यह नियम था कि सवेरे उठकर वे संस्कृत का एक श्लोक बनाया करते थे। उस दिन उन्होंने श्लोक के तीन चरण तो बना लिये, पर चौथा चरण बनाने में उलझ गये। तीन चरण इस प्रकार थे –

''चेतोहरा युवतयः सुहृदोऽनुकूलाः,
सद् बान्धवाः प्रणयगर्भगिरश्च भृत्याः
गर्जन्ति दन्तिनिवहाश्चपलास्तुरंगः

जब राजा ने ये तीन चरण बना लिये और चौथा चरण न बन पड़ा, तो नीचे छिपे हुए चोर कवि ने चौथा चरण बोलकर इस चरण को ऐसे पूरा किया –

''सम्मिलिते नयनयोनं हि किंचिदस्ति।''

पूरे श्लोक का भाव यह है कि राजा गर्व से कहता है ''मेरे रानीवास में अनेक मन को मोहित करने वाली युवतियां है, अनुकूल मित्र हैं, उत्तम संबंधी व बन्धु–बान्धव हैं, मधुर बोलने वाले नौकर–चाकर हैं, हाथियों के झुण्ड गरजते रहते हैं, चंचल घोड़े भी हैं। अन्तिम पंक्ति राजा को सूझ न आई। तब चोर कवि ने नीचे से पुकारा, ऑखों को बन्द कर लेने पर, मौत होने पर कुछ भी बाकी नहीं रह जाएगा।

बालकों ! इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि जो कुछ हमें धन, सन्तान, अधिकार आदि भोग्य पदार्थ मिले हैं, वे सब प्रभु की कृपा से प्राप्त होते हैं।

राजा भोज के समय इतनी विद्या फैली हुई थी कि चोर भी कवि हुआ करते थे। उसने राजा को यह उपदेश दिया कि यह सब ठाठ बाट सदा रहने वाला नहीं। ऑखें बन्द होने पर सब यहीं पड़ा रह जाएगा। केवल पाप पुण्य साथ जाएंगें। सेठजी, की फिक्र थी कि एक–एक के दस–दस कीजिए। मौत आ पहुंची कि साहब जान वापस कीजिये। इसलिए हमें इस जीवन के हर एक वस्तु का त्याग भाव से यह समझकर कि ये सब पदार्थ भगवान की दी हुई धरोहर के रूप में दिये गये हैं, उपभोग करना चाहिए।

दलित मुस्लिम गठजोड़ : दलित समाज को हिन्दुओ से अलग करने का राजनैतिक षड़यन्त्र

दिखाने में भले ही यह दलित–मुस्लिम गठजोड़ राजनीतिक सा लगता हो, लेकिन अन्दर ही अन्दर इसे सामाजिक धरातल पर अमली जामा पहनाया जा रहा है। इस वर्ष अमर बलिदानी पंडित लेखराम जी के बलिदान दिवस पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज करोलबाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अत्यन्त ज्वलन्त विषय ''दलित समाज को हिन्दुओं से अलग करने का राजनैतिक षड़यन्त्र'' चर्चा का मुख्य बिन्दु रहा। यह विषय उठाना आज के समय की तर्कसंगत मांग है यदि अभी इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में जो परिणाम सामने आयेगें वे देश, धर्म और समाज के लिए बेहद निराशाजनक होंगे।

इस विषय पर इतिहास का एक प्रसंग जरूरी है। जब हस्तिनापुर में षड़यन्त्र पर षड़यन्त्र रचे जा रहे थे उस समय महात्मा विदुर ने पितामह भीष्म से कहा था कि 'पितामह जब हस्तिनापुर में पाप की नदी बह रही होगी तब मैं और आप उसके किनारे खड़े होंगें।' भीष्म पितामह ने पूछा ''किनारे पर क्यों ?'' तो विदुर ने कहा था 'कि कम से कम मैं और आप इन षड़यन्त्रों पर चर्चा तो कर लेते हैं, बाकी तो वह भी जरूरी नहीं समझते।'' कहने का आशय यही है कि आज यह विषय बेहद प्रासंगिक है। इस पर चर्चा और कार्य भी जरूरी है। एक छोटा सा उदाहरण शायद इस षड़यन्त्र को समझने में देर नहीं लगायेगा। हाल ही में पाकिस्तान के अन्दर एक हिन्दू महिला कृष्णा कुमारी कोल्ही को वहॉ की सीनेट (राज्यसभा सदस्य) के लिए निर्वाचित किया गया है। लेकिन भारत समेत विश्व भर की मीडिया ने इस खबर को कुछ इस तरह पेश किया कि पाकिस्तान में कृष्णा कुमारी कोल्ही सीनेट के लिए निर्वाचित होने वाली देश की पहली हिन्दू महिला बन गई है।

हर एक मीडिया घराने ने इसमें हिन्दू के साथ दलित शब्द का उपयोग क्यों किया ! मतलब साफ है कि यह खबर इसी षड़यन्त्र का हिस्सा है। पिछले वर्ष गुजरात में घटित ऊना की एक घटना के बाद से दलितों के उत्थान के नाम पर रैलियॉ कर बरगलाया जा रहा है। इन रैलियों में दलितों के साथ–साथ मुसलमान भी बढ़ चढ़कर भाग ले रहे हैं। ऐसा दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि मुसलमान दलितों के हमदर्द हैं। इसके बाद भीमा कोरेगॉव में शौर्य दिवस और वहॉ उपस्थित मुस्लिम संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया, मूल निवासी मुस्लिम मंच, छत्रपति शिवाजी मुस्लिम ब्रिगेड, इलित इलम आदि संगठन थे। इसके बाद दलितों पर अत्याचार की कहानी सुनाई गई। यह कि आज भी दलितों पर अत्याचार होता है और अत्याचार करने वाले सिर्फ हिन्दू होते हैं।

दरअसल देश में सरकारी आंकड़े बताते हैं कि दलित करीब 20 फीसदी हैं और मुसलमान 15 फीसदी। दोनों मिलकर 35 फीसदी के लगभग हैं। क्यों न इसकी वर्तमान में राजनीतिक और भविष्य में धार्मिक खुराक बनाई जाये। क्योंकि सभी जानते हैं कि बाकी हिन्दू समाज तो ब्राह्मण, बनिया, यादव, जाट, राजपूत आदि में विभाजित है। गौरतलब बात यह है कि दलितों को भड़काने वालों के दलित नेताआं के लिए डॉ. अम्बेडकर के इस्लाम के विषय में विचार भी कोई मायने नहीं रखते। डॉ. अम्बेडकर ने इस्लाम स्वीकार करने का प्रलोभन देने वाले हैदराबाद के निजाम का प्रस्ताव न केवल खारिज कर दिया अपितु 1947 में उन्होंने पाकिस्तान में रहने वाले सभी दलित हिन्दुओं को भारत आने का सन्देश दिया। डॉ. अम्बेडकर 1200 वर्षों से मुस्लिम हमलावरों द्वारा किये गए अत्याचारों से परिचित थे। वे जानते थे कि इस्लाम स्वीकार करना कहीं से भी जातिवाद की समस्या का समाधान नहीं है, क्योंकि इस्लामिक फिरके तो आपस में ही एक दूसरे की गर्दन काटते फिरते हैं। वह जानते थे कि इस्लाम स्वीकार करने में दलितों का हित नहीं अहित है। लेकिन आज डॉ. अम्बेडकर की तस्वीर मंच पर सजाकर उसके इस्लाम के प्रति विचारों को किनारे कर दफनाने का कार्य किया जा रहा है। वामपंथी सोच वाला प्रिन्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इस षड़यन्त्र में महत्वपूर्ण भूमिकर ाह निभाता दिख रहा है। समाजवाद का ढ़ोल पीटने वाले भारतीय राजनीतिक दल इस्लामवाद की चपेट में आकर दलित समुदाय के सामाजिक विकास को प्रोत्साहन देने के बजाय उल्टा उनको इस्लामवाद की भट्‌टी में झोंकने में तत्पर से दिखाई दे रहे हैं।

जनवाद के नाम से नये मंच तैयार किये जा रहे हैं। जिनमें दलितों को भारतीय महापुरूषों के प्रति घृणा का पाठ पढ़ाया जा रहा है। उन्हें बताया जा रहा है कि दलित एवं पिछड़े वर्ग को तो होली, दशहरा, दिवाली एवं भारतीय महापुरूषों के जन्मोत्सव तक नहीं मनाने चाहिए। रावण को उनका आराध्य देव बताकर नफरत सिखाई जा रही है। क्या ये जनवादी और अम्बेडकर के नाम पर रोटी तोड़ने वाले तथाकथित दलित हितेषी दल इस नफरत से दलितों को अपने ही धर्म और समाज से दूर करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं ?

आर्य समाज हमेशा से ही सामाजिक समरसता, जातिवाद और छूआछूत का विरोधी रहा है। आर्य समाज ने दलित उत्थान को सामाजिक धरातल पर तो उतारा ही साथ में बलिदान भी दिए। पण्डित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द यदि दलित समाज के उत्थान के लिए शुद्धि का आन्दोलन न चलाते तो क्या मजहबी उन्मादी उनकी हत्या करते ? सबसे पहले आर्य समाज ने पुरोहितवाद पर हमला किया, शूद्र समझे जाने वाले वर्ग को सीने

से तो लगाया ही साथ ही उनको वह सब अधिकार दिलाये जिस पर हिन्दू धर्म को अपनी बपौती समझने वाले अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। लोगों को बताया कि वर्ण व्यवस्था कर्म के आधार पर थी न कि जन्म के आधार पर।

आज यदि कोई जाति व्यवस्था को जन्म साथ जोड़ता है तो वह निःसन्देह धर्म को तोड़ने का कार्य कर रहा है। यदि हम भारत को पुनः वैभवशाली बनाना चाहते हैं तो यह धारणा स्थापित करनी पड़ेगी कि सम्पूर्ण हिन्दू एक है, उसका प्रत्येक जन मेरा प्रिय भाई है। उन्हें महसूस होना चाहिए कि हम हिन्दू समाज का अटूट अंग हैं और हमें जाति के नाम पर अलग करने वाले अपना राजनैतिक स्वार्थ पूरा कर रहे हैं। इस बार पंड़ित लेखराम जी के बलिदान दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम सभी जातिमुक्त और जाति के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने की प्रक्रिया को अधिक निष्ठा के साथ व्यावहारिक जीवन पद्धति में अपनायें यही पंड़ित लेखराम जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजति होगी और दलित मुस्लिम गठजोड़ को अमली जामा पहनाने वालों के मुंह पर कालिख होगी।

साभार – साप्ता. आर्य सन्देश, दिल्ली

जरा सोचें, संभले और करें।

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जायें।
इतने गरम मत बनो कि लोग तुम्हें छू भी न सकें।

इतने सरल मत बनो कि लोग तुम्हें मूर्ख बना दें।
इतने जटिल मत बनो कि लोग तुम्हें मिल न सकें।।

इतने गम्भीर मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जायें।
इतने छिछले मत बनो कि लोग तुम्हें माने ही नहीं।।

इतने महंगे मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सके।
इतने सस्ते भी मत बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।।

आपके एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।
आपके एक पल का सत्संग भविष्य बना सकता है।।

सत्य

सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा है, उसे याद नहीं रखना पड़ता।

संकलन – स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

वैदिक ज्ञान प्रश्नावली

प्र.1 ईश्वर ने मनुष्य को सबसे अच्छी वस्तु कौन सी प्रदान की है।
क– हाथ पैर ख– मन ग– बुद्धि घ– शक्ति

प्र.2 ईश्वर का स्वरूप कैसा है ?
क– परिवर्तनशील ख– साकार ग– कल्पना रूप घ–निराकार

प्र.3 क्या परमात्मा मनुष्य का रूप धारण कर सकता है ?
क– कर सकता है ख– नहीं ग– इच्छा अनुसार

प्र.4 ओ3म् शब्द में कितने अक्षर हैं
क– 2 ख– 3 ग– 4 घ– 1

प्र.5 क्या ईश्वर का ज्ञान बदलता है ?
क– नहीं ख– बदलता है ग– समयानुसार बदलता है

प्र.6 ईश्वर कहाँ रहता है ?
क– कैलाश पर्वत ख– सातवें आसमान
ग– चौथे आसमान घ– कण–कण में

प्र.7 ईश्वर के कितने नाम हैं ?
क– 101 ख– 10 ग– 95 घ– असंख्य

प्र.8 ईश्वर कितने प्रकार के होते हैं ?
क– 1 ख– 3 ग– 2 घ– 5

प्र.9 सन्ध्या दिन में कितनी बार करने का विधान है ?
क– 1 ख– 2 ग– 3 घ– 4

प्र.10 परमात्मा की भक्ति से क्या मिलता है ?
क– सुख ख– समय नष्ट ग– आनन्द घ– क्लेश

प्र.11 पूज्यनीय प्रभो हमारे यज्ञ की प्रार्थना को किसने लिखा है ?
क– देवनाथ विद्यालंकार ख– महात्मा हंसराज
ग– लोकनाथ तर्क वाचस्पति घ– गणपति आर्य

प्र.12 संध्या में मनसा परिक्रमा के कितने मन्त्र हैं ?
क– 4 ख– 5 ग– 6 घ– 8

प्र.13 शान्ति पाठ का मन्त्र किस वेद से लिया गया है ?
क– यजुर्वेद ख– सामवेद ग– ऋग्वेद घ– अथर्ववेद

प्र.14 संध्या में उपस्थान के कुल कितने मन्त्र हैं ?
क– 4 ख– 6 ग– 10 घ– 12

प्र.15 ईश्वर का अस्तित्व कितनी देर रहता है ?
क– जब तक संसार है ख– सर्वदा
ग– जब तक ब्रह्माण्ड है घ– अस्तित्व है ही नहीं

प्र.16 हम ईश्वर की प्रार्थना क्यों करते हैं ?

क– मन और बुद्धि पवित्र हो ख– हमारी इच्छाऐं पूरी हो

ग– पाप क्षमा हो घ– शारीरिक दुःख न हो

प्र.17 ईश्वर को हम देख क्यों नहीं सकते ?

क– ईश्वर है ही नहीं ख– वह बहुत दूर है

ग– वह निराकार है घ– अभी अवतार नहीं लिया

प्र.18 ईश्वर के अनन्त नाम किस आधार पर हैं ?

क– गुणों का आधार ख– व्याकरण का आधार

ग– महापुरूषों के कहने पर घ– शास्त्रों के अनुसार

प्र.19 संसार को बनाने वाला कौन है ?

क– ईश्वर ख– प्रकृति ग– स्वयं घ– जीव

प्र.20 ईश्वर का निज नाम क्या है ?

क– ओ3म् ख– परमात्मा ग– ईश्वर घ– गणेश

प्र.21 हमें कर्मों का फल कौन देता है ?

क– प्रकृति ख– आत्मा ग– ईश्वर घ– स्वयंमेव

प्र.22 आर्य समाज के किस नियम में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन है ?

क– 4 ख– 2 ग– 8 घ– 10

प्र.23 सब सत्य विद्याओं का आदिमूल कौन है ?

क– ईश्वर ख– वेद ग– ऋषिमुनि घ– कोई नहीं

प्र.24 संसार का पालन कौन करता है ?

क– स्वयंमेव ख– प्रकृति ग– आत्मा घ– ईश्वर

प्र.25 संसार का संहार कौन करता है ?

क– प्रकृति ख– ईश्वर ग– आत्मा घ– स्वयमेव

निरन्तर..............

विशेष सूचना : सभी आर्य समाजें अपने यहाँ 15 मई 2018 तक निर्वाचन करवाकर महू पते पर प्रतिनिधि चित्र प्रेषित करें। दशांष का चैक महू पते पर भेजें। नगद राशि सभा के खाते में डालें अथवा संभागीय उपप्रधान, उपमन्त्री को देकर रसीद प्राप्त करें।

प्रकाश आर्य

मन्त्री–मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

आर्य समाज, लुनियापुरा, महू (म.प्र.) 453441

समाचार

108 कुण्डीय विश्व कल्याण महायज्ञ के साथ स्वर्ण जयन्ती समारोह का शुभारम्भ धूमधाम के साथ सम्पन्न

थान्दला। अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला जिला झाबुआ म. प्र. के स्थापना को पचास वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयन्ती समारोह वर्ष का शुभारम्भ ग्राम पिपलोदा बड़ा तह. मेघनगर जिला में धर्म रक्षा समिति के माध्यम से दिनांक 20–21–22 फरवरी को आचार्य दयासागर के कुशल नेतृत्व में 108 कुण्डीय वैदिक विश्व कल्याण महायज्ञ व भक्ति सत्संग का विराट आयोजन धूमधाम के साथ 5 हजार लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

गौरतलब है कि आंज से 50 वर्ष पूर्व थांदला में हमारे पूर्वज आर्यजनों ने ईसाइयों के प्रकोप से जिले में बड़ी तेजी से हो रहे धर्मान्तरण पर अंकुश लगाने व जन–जन में मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का स्वजीवन, स्वपरिवार व स्वदेश बनाने की दृष्टि से महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थांदला की स्थापना की थी।

इन पचास वर्षों में सेवाश्रम द्वारा चलाए गए बालक आश्रम, कन्याश्रम, छात्रावास, बालवाड़ी, शिक्षा केन्द्र, स्वास्थ केन्द्र, वैचारिक क्रान्ति शिविर, कन्या जागृति शिविर, मद्य निषेध शिविर, अस्पृष्यता निवारण शिविर, आर्य वीर दल व चरित्र निर्माण शिविर, वैदिक पद्धति से बड़े स्तर पर विवाहों का आयोजन वेद प्रचार आयोजन, भजन मण्डली आदि अभियानों से अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक सुधार हुए। 1968 से संचालित सेवाश्रम के पचास वर्ष पूर्ण होने आगामी वर्ष 2019 के जनवरी में महर्षि दयानन्द थान्दला झाबुआ (म.प्र.) में अखिल भारतीय स्तर पर महायज्ञ करने का निर्णय लिया गया है। जिसका शुभारम्भ उपरोक्त कार्यक्रम के माध्यम से किया गया है। विशाल आयोजन को सम्पन्न करने की जिम्मेदारी सेवाश्रम के कोषाध्यक्ष श्री गुलाबसिंह आर्य, सेवाश्रम सदस्य श्री कैलाश गेहलोत सेवाश्रम उपाध्यक्ष वरिष्ठ समाज सुधारक व राजनैतिक कार्यकर्ता भुरका भाई, राकेश भुरिया व साथियों के मजबूत कन्धों पर संयोजकत्व का भार देकर 108 कुण्डीय विश्व कल्याण महायज्ञ व वैदिक भक्ति सत्संग हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

आयोजन में अत्यन्त पिछड़े क्षेत्र व ईसाइयत के कुचक्र से प्रभावित चार ग्राम पंचायत पिपलोदा बड़ा, पीपल खूँटा, काजली डुँगरी, विसलपुर तथा आसपास के क्षेत्र को सम्मिलित किया गया। सेवाश्रम के संचालक व छ. ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान माननीय आचार्य दयासागर जी के कुशल नेतृत्व में समारोह को दृश्य अद्भुत व लोमहर्षक था। 108 कुण्डों पर उपस्थित 111 जोड़ी यजमान दम्पत्ति को एक साथ भारतीय वैदिक परिवेश में जनजाति (आदिवासी) बन्धुओं को महायज्ञ करते हुए देखकर हर्षातिरेक से लोगों की ऑखें नम हो गई।

आश्चर्य की नजरों से देखकर सहसा कुछ समय के लिए जुबान भी बयां करने के लिए ठहर सी गई। काश ! आज से पूर्व भी इस तरह का आध्यात्मिक याज्ञिक वातावरण बनाया जाता तो विधर्मियों का ताण्डव आज की तरह न होता।

महायज्ञ के अन्तिम दिन 22 फरवरी को मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विद्वान व कर्मठ महामन्त्री माननीय प्रकाश जी आर्य का विशेष आगमन हुआ। माननीय मन्त्रीजी ने आयोजन को सफल बनाने वाले महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं को फूल माला पहनाकर आशीर्वाद दिया तथा अपने प्रेरणास्पद व सारगर्भित उद्बोधन से गरिमा प्रदान की तथा 11000/– रूपये का आर्थिक सहयोग प्रदान करते हुए धर्म रक्षा के लिए चलाए जा रहे सभी अभियानों में आगे सदा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

विगत 25 वर्षों से मध्यप्रदेश व राजस्थान में सेवाश्रम की सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में पूर्णतः समर्पित जीववर्धन जी शास्त्री ने सेवाश्रम के इतिहास की ओर इंगित करते हुए पूजनीया माता प्रेमलता शास्त्री व ईश्वर रानी माता जी के योगदान की चर्चा करते हुए आपसी भाईचारे से प्रेम पूर्वक स्वधर्म में रहने का सन्देश दिया।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल की मजबूत प्रचारकों की टीम ने एक सप्ताह पूर्व से अलग–अलग गॉवों में प्रचार की कमान संभाल रखी थी। जिसमें आचार्य सुरेशचन्द्रजी शास्त्री के अत्यन्त सारगभ्रित प्रवचन हुए। पं. दिलीप आर्य, पं. विनोद आर्य व पं. सुरेश आर्य द्वारा गाये गए गीत व वैदिक भजनों की श्रृंखला ने नया जोश व उत्साह का वातावरण बना दिया।

108 कुण्डीय महायज्ञ की व्यवस्था में महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थान्दला के 100 से अधिक छात्र–छात्राओं ने एक सप्ताह तक दिन रात लगकर यज्ञशाला, यज्ञ कुण्ड निर्माण व याज्ञिक व्यवस्था में अथक परिश्रम किया, निश्चित ही संस्कारवान विद्यार्थियों का कार्य अत्यन्त स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है। पं. धर्मवीर शास्त्री, पं. रणवीर शास्त्री, पं. संजय शास्त्री, पं. पंकज शास्त्री आदि विद्वानों ने याज्ञिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महर्षि दयानन्द सेवाश्रम थान्दला के शिक्षक महानुभाव एवं काकनवानी छात्रावास के शिक्षक महानुभावों का प्रयास सराहनीय रहा।

इस महायज्ञ को सफल बनाने में सेवाश्रम के अध्यक्ष विश्वासजी सोनी व संगीता सोनी ने 150 साड़ी व 75 किलो घी की व्यवस्था कर अनुकरणीय कार्य किया तथा नगर पालिका परिषद थान्दला के अध्यक्ष माननीय भाई बन्टी डामोर ने यज्ञ व्यवस्था में आर्थिक सहयोग दिया। आर्य समाज रतलाम ने यज्ञपात्रों की विशेष व्यवस्था की तथा आर्य समाज सैनिक विहार के पूर्व मन्त्री माननीय विनय अग्रवालजी ने चार क्विंटल हवन सामग्री देकर महायज्ञ को सफल बनाया।

गायत्री मन्त्र और वैदिक भजनों का गान करते हुए मनमोहक व सुन्दर यज्ञशाला की परिक्रमा कर रहे हजारों ग्रामवासियों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो श्रीराम युग व वैदिक स्वर्ग यही है।

आचार्य दयासागर के कुशल नेतृत्व व ब्रह्मत्व में सम्पादित यह अभूतपूर्व कार्य हमेशा याद रहेगा।

अन्तर्वेलिया (झाबुआ) में तीन दिवसीय प्रचार कार्यक्रम

चारों ओर से ईसाई मिशनरी से घिरा क्षेत्र अन्तर्वेलिया है यहाँ की गतिविधियों को रोकने के लिए मिशनरी निरन्तर कोई षडयन्त्र रचती है। संस्था व कार्यकर्ताओं के विरूद्ध झूठी शिकायतें कर परेशान करते हैं। किन्तु यह स्थान जिसमें सत्संग भवन, रहवास व्यवस्था, छात्र छात्राओं को रहने का स्थान निर्मित है। (अब वह कमजोर व जीर्ण हो गया है) वह सभा को हस्तांतरित करने का निर्णय समिति ने लिया है। तभी से सभा उस क्षेत्र में विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यथायोग्य सहयोग भी दिया जा रहा है। इसी तारतम्य में दिनांक 16 से 18 मार्च तीन दिवसीय यज्ञ, प्रवचन, भजन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रतिदिन यज्ञ, भजन व प्रवचन प्रातः 9 से रात्रि देर तक होते रहे। कार्यक्रम में आसपास के रहवासी आदिवासी उपस्थित हैं, कुछ आदिवासियों ने शराब, मांस, तमाकू का उपयोग न करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर उज्जैन संभाग के उपप्रधान श्री लक्ष्मीनारायणजी, इन्दौर संभाग के उपप्रधान श्री गोविन्दजी, सभा के भू सम्पत्ति अधिष्ठाता श्री वेदप्रकाश आर्य भी उपस्थित हुए। सभा की ओर से 5000/– नगद, प्रचार वाहन, प्रचार सामग्री भी उपलब्ध करवाई। आचार्य दयासागर, काशीरामजी अनल, सुरेशचन्द्र शास्त्री, भीमसिंहजी, बरसिंह, धर्मवीरजी, खेमचन्दजी, स्वामी विश्वामित्र, आचार्य पीताम्बर लाल आदि प्रमुख व्यक्तियों द्वारा पधारकर कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

गतांक से आगे...........

सावधान –

ग्वालियर जैसे शहरों में कुछ व्यक्तियों ने आर्य समाज अवैधानिक तरीके से प्रारंभ कर दिये हैं वहां प्रायः विवाह का कार्य ही सम्पन्न होता है। मध्य भारत क्षेत्र में केवल मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा जिसका मुख्यालय टी. टी. नगर भोपाल है, उसकी स्वीकृति से ही आर्य समाज संचालित की जा सकती है।

इस सभा के अन्तर्गत ग्वालियर संभाग की प्रमुख समाजें है– आर्य समाज नयाबाजार, आर्य समाज चित्रगुप्तगंज, आर्य समाज लोहामण्डी, आर्य समाज मुरार (बारादरी), आर्य समाज डबरा, आर्य समाज बिलोआ, आर्य समाज गोसपुरा, आर्य समाज गंगाविहार कॉलोनी, गोले का मन्दिर। इसके अतिरिक्त मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से कोई अधिकृत आर्य समाज नहीं है। अन्य शहरों की जानकारी आगामी अंक में प्रकाशित की जावेगी।

गतांक में त्रुटिवश इन्दौर की आर्य समाजों के नाम में आर्य समाज सिन्धी कॉलोनी, इन्दौर का नाम प्रकाशन में छूट गया था।

निरन्तर......

टिगरिया गौशाला में अन्तरंग बैठक सम्पन्न

प्रान्तीय सभा द्वारा कन्या गुरूकुल प्रारंभ करने की तैयारी

दि. 11 मार्च 2018 को टिगरिया गौशाला में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में अनेक विषयों पर निर्णय लिए गए।

प्रदेश में कहीं पर भी कन्या गुरूकुल नहीं था व इसकी कमी कई वर्षों से खल रही थी। इस कारण मध्य भारत क्षेत्र से बच्चियॉं दूर गुरूकुल में भेजने में पालक संकोच करते थे।

यह भूमि दान में पाटीदार परिवार द्वारा दी गई थी, कई वर्षों से वहॉं कोई कार्य न होने पर दानदाता भी बार–बार वहॉं कुछ करने का तगादा लगा रहे थे। इस संबंध में 5 वर्ष पूर्व निश्चय हुआा था कि इस क्षेत्र में कन्या गुरूकुल की स्थापना करनी चाहिए जिससे माता–पिता अपनी बच्चियों को पढ़ाई के लिए दूर भेजने की समस्या से निजात हो जायें। इसी भावना से मोहन बड़ोदिया में निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। इस हेतु श्री दलवीरसिंहजी राघव का भी विशेष सुझाव था। प्रारंभ में लगभग 7–8 लाख रूपया एकत्रित भी हुआ, बाद में कुछ अन्य महानुभावों ने व सभा ने सहयोग किया, इससे वहॉं कुछ निर्माण हो चुका है। परन्तु जितना निर्माण हुआ है उससे 3 गुना अधिक निर्माण करने की आवश्यकता है। इस हेतु समस्त आर्यजनों से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग की अपेक्षा है।

गुरूकुल प्रारंभ करने में सबसे बड़ी समस्या यह थी कि कन्याओं के शिक्षण व्यवस्था के लिए व्यवस्था कैसे की जावें। प्रसन्नता की बात है कि इस हेतु पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस गुरूकुल से हमें स्वीकृति मिल गई है। उनके यहां के पाठ्यक्रम और व्यवस्था के अनुसार ही इस विद्यालय का संचालन किया जायेगा।

गुरूकुल में प्रारंभिक शिक्षा 3 से 5 वर्ष तक की मोहन बड़ोदिया गुरूकुल से दी जायेगी, इसके पश्चात आगामी पढ़ाई हेतु गुरूकुल बनारस में कन्याओं को स्थानान्तरित किया जायेगा। इस हेतु आचार्या नन्दिता जी शास्त्री चतुर्वेदा से जो गुरूकुल की अधिष्ठाता भी हैं उन्होंने इस हेतु आश्वस्त किया है, वे अपने गुरूकुल से शिक्षण हेतु योग्य आचार्या व शास्त्री भेजेगीं।

गुरूकुल का सत्र जुलाई से प्रारंभ होने जा रहा है। इस हेतु शीघ्र ही प्रवेश के संबंध में जानकारी और उसका शुल्क आदि विस्तृत रूप से प्रकाशित किया जावेगा।

विशेष :– इस संबंध में सभी आर्यजनों से निवेदन है कि गुरूकुल के संचालन व व्यवस्था हेतु तन मन धन से सहयोग कर एक पवित्र कार्य में अपना सात्विक सहयोग करें। सहयोग राशि सभा के माध्यम से भेजें व रसीद प्राप्त करें। अथवा सभा द्वारा अधिकृत व्यक्ति को दान राशि देकर रसीद प्राप्त करें बिना रसीद के कृपया दान न देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना ■ सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू